



## शांति के लिये एशियाई बौद्ध सम्मेलन

### प्रलिस के लिये:

शांति के लिये एशियाई बौद्ध सम्मेलन की 12वीं महासभा, ABCP का मुख्यालय, भारत अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति केंद्र, चार आर्य सत्य, बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग, [गौतम बुद्ध](#)

### मेन्स के लिये:

सुशासन के सदिधांतों और बौद्ध शक्तिषाओं का अभसिरण, वर्तमान चुनौतियों से नपिटने में बुद्ध की शक्तिषाओं का महत्त्व

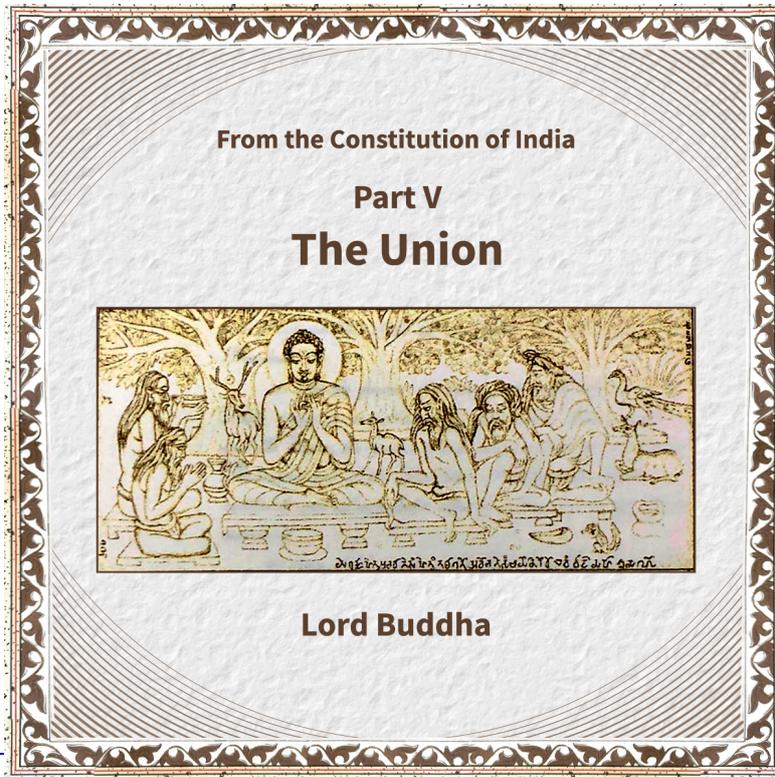
[स्रोत: पी.आई.बी](#)

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में एशिया में बौद्ध अनुयायियों के एक स्वैच्छिक जनआंदोलन, शांति के लिये एशियाई बौद्ध सम्मेलन (Asian Buddhist Conference for Peace-ABC) ने नई दल्लि में अपनी 12वीं महासभा का आयोजन किया।

## 12वीं ABCP महासभा की प्रमुख झलकियाँ विशेषताएँ क्या हैं?

- थीम/वषियवस्तु: ABCP- द बुद्धसिस्ट वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ, यह थीम यह भारत की प्रतबिद्धता को दर्शाती है, जैसा कि इसकी [G20 अध्यक्षता](#) और [वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिति](#) के माध्यम से पता चलता है।
- बुद्ध की वरिसत के प्रतभारत की प्रतबिद्धता: महासभा में भारत को बुद्ध के सदिधांतों द्वारा नरिदेशति राष्ट्र के रूप में चतिरति किया गया।
  - [बौद्ध सर्कटि के वकिस और भारत अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति केंद्र \(India International Centre for Buddhist Culture\)](#) की स्थापना में भारत की सक्रयि भूमिका पर प्रकाश डाला गया।
- बुद्ध के प्रभाव की संवैधानिक मान्यता: भारतीय संवधान की कलाकृति में भगवान बुद्ध के चतिरण को महत्त्व दिया गया है, वशिष रूप से **भाग V** में, जहाँ उन्हें [संघ शासन](#) से संबंधति अनुभाग में चतिरति किया गया है।



## शांति के लिये एशियाई बौद्ध सम्मेलन (ABCP) क्या है?

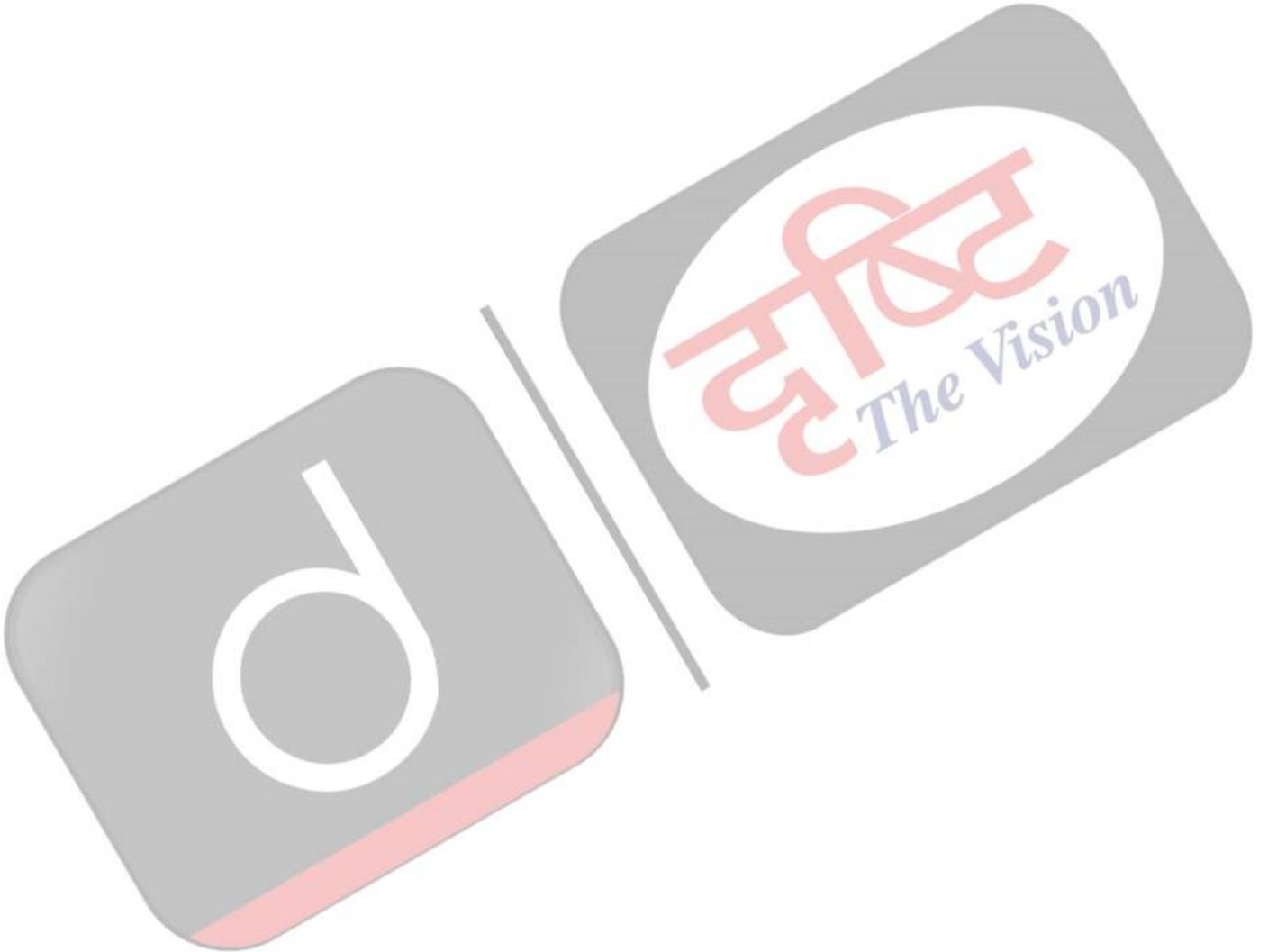
- **परिचय:** ABCP की स्थापना वर्ष 1970 में मंगोलिया के उलानबटार में बौद्ध धर्म के अनुयायियों [मठवासी (भिक्षुओं) और आम जन दोनों] के एक स्वैच्छिक आंदोलन के रूप में की गई थी।
  - तब ABCP भारत, मंगोलिया, जापान, मलेशिया, नेपाल, तत्कालीन USSR, वियतनाम, श्रीलंका, दक्षिण और उत्तर कोरिया के बौद्ध गणमान्य व्यक्तियों के एक सहयोगात्मक प्रयास के रूप में उभरा।
- **मुख्यालय:** उलानबटार, मंगोलिया में गंडानथेगचेनलिंग (Gandantsegchenling) मठ।
  - मंगोलियाई बौद्धों के सर्वोच्च प्रमुख ABCP के वर्तमान अध्यक्ष हैं।
- **ABCP के उद्देश्य:**
  - एशिया के लोगों के बीच सार्वभौमिक शांति, सद्भाव और सहयोग को मज़बूती प्रदान करने हेतु बौद्ध अनुयायियों के प्रयासों को एक साथ लाना।
  - उनकी आर्थिक और सामाजिक उन्नति को प्रोत्साहित करना तथा न्याय एवं मानवीय गरमा के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।
  - **बौद्ध संस्कृति**, परंपरा और वरिसत का प्रसार करना।

## किस प्रकार बौद्ध शिक्षाएँ सुशासन के सिद्धांतों के अनुरूप हैं?

- **नीति निर्माण में सम्यक् दृष्टि:** विकृति और भ्रम से दूर रहते हुए, सम्यक् दृष्टि पर बुद्ध का जोर, पारदर्शिता, निष्पक्षता तथा साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने के सुशासन सिद्धांतों के अनुरूप है।
  - उदाहरण के लिये, बौद्ध धर्म के मूल्यों से प्रेरित भूटान का सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता सूचकांक (Gross National Happiness index), केवल आर्थिक संकेतकों से परे सार्वजनिक कल्याण को मापने का उद्देश्य रखता है।
- **नेतृत्व में सम्यक् आचरण:** बुद्ध के पंचशील सिद्धांतों- अहंसा, अस्तेय, अपरगिरह, ब्रह्मचर्य और नशा न करना, की व्याख्या सार्वजनिक अधिकारियों के लिये नैतिक दिशा-निर्देशों के रूप में की जा सकती है।
- **करुणाशील शासन:** बुद्ध की करुणा की मूल शिक्षा नेतृत्वकर्त्ताओं को केवल कुछ समूहों की नहीं, बल्कि सभी नागरिकों की आवश्यकताओं व पीड़ा पर विचार करने के लिये प्रोत्साहित करती है।
  - उदाहरण के लिये, सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल या निष्पक्ष कराधान नीतियों जैसी पहल मन में करुणा के साथ शासन करने के प्रयास को दर्शाती हैं।
- **संवाद और अहसिक संघर्ष समाधान:** सम्यक् भाषण और सम्यक् कार्रवाई पर बुद्ध का जोर सम्मानजनक संचार एवं संघर्ष के अहसिक समाधान को बढ़ावा देता है।
  - इसे अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, अंतर-धार्मिक संवाद और यहाँ तक कि आंतरिक राजनीतिक चर्चाओं में भी लागू किया जा सकता है।

## बुद्ध की शिक्षाएँ वर्तमान चुनौतियों से निपटने में कैसे मदद कर सकती हैं?

- **नैतिक अनश्चितता के लिये दशा-नरिदेश:** नैतिक अनश्चितता से भरे युग में, बुद्ध की शक्तिपूर्ण सभी जीवों के लिये **स्थिरता/धारणीयता, सरलता, संयम और श्रद्धा** का मार्ग प्रदान करती हैं।
  - **चार आर्य सत्य** और **अष्टांगिक मार्ग** एक परिवर्तनकारी रोडमैप के रूप में कार्य करते हैं, जो व्यक्तियों एवं राष्ट्रों का मार्गदर्शन कर उन्हें **आंतरिक शांति, करुणा और अहंसा** की ओर प्रेरित करते हैं।
- **वचिलि होते विश्व में सचेतना:** **डिजिटल रूप से नरितर परिवर्तनशील** युग में, बुद्ध का सचेतन मन पर ज़ोर पूर्व की तुलना में कहीं अधिक मार्मिक है।
  - ध्यान-योग जैसे अभ्यास हमें **सूचना के अधभार से बाहर निकलने, तनाव को कम करने** और बखिरी हुई दुनिया में ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं।
- **एक धरुवीकृत समाज में करुणा:** बढ़ते सामाजिक और राजनीतिक तनाव के साथ, करुणा एवं प्रज्ञा (Understanding) पर **बुद्ध की शक्तिपूर्ण एक महत्त्वपूर्ण प्रतिकार** प्रदान करती हैं।
  - सभी प्राणियों के बीच अंतरसंबंध को मान्यता देने पर उनका ज़ोर सहानुभूतपूरण संचार और रचनात्मक संघर्ष समाधान को प्रोत्साहित करता है।
- **सब कुछ या कुछ भी नहीं संस्कृत में मध्यम मार्ग:** भोग और इनकार की चरम सीमा से बचने के लिये बुद्ध की मध्यम मार्ग की अवधारणा, हमारे उपभोक्तावादी समाज में प्रतधिवनति होती है।
  - यह **व्यक्तगत इच्छाओं और उत्तरदायी जीवन** के बीच **संतुलन स्थापित कर**, समुचित उपभोग को प्रोत्साहित करता है।



# गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों ( दशावतार ) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

## जन्म

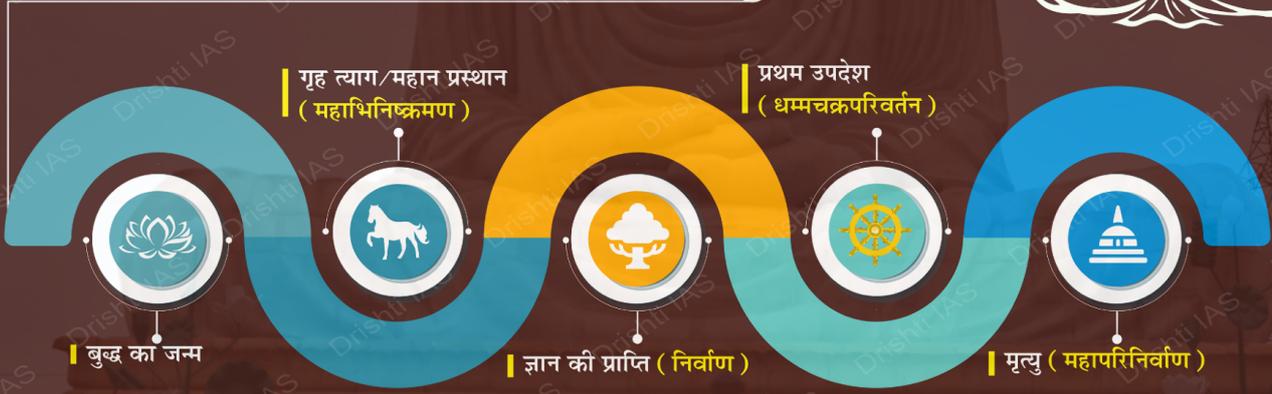
- सिद्धार्थ के रूप में जन्म ( 563 ईसा पूर्व )
- जन्मस्थान- लुम्बिनी ( नेपाल )  
कपिलवस्तु के निकट

## माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक;  
शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी



## महत्त्वपूर्ण घटनाएँ



बुद्ध ने स्वयं को तथागत ( वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया ) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

## समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

## बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया ( ज्ञान प्राप्ति ) ( ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए )
- सारनाथ ( प्रथम उपदेश )
- वैशाली ( अंतिम उपदेश )
- कुशीनगर ( मृत्यु ( 487 ई.पू. ) का स्थान )

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

?????????:

प्रश्न. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर वचन कीजिये: (2020)

- स्थावरवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
- लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।
- महासंघिकों द्वारा बुद्ध के देवत्वरोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में नमिन्लखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2016)

1. बोधसित्त्व, बोद्ध मत के हीनयान संप्रदाय की केंद्रीय संकल्पना है ।
2. बोधसित्त्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करुणामय है ।
3. बोधसित्त्व समस्त सचेतन प्राणयिों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लयि स्वयं की नरिवाण प्राप्ति विलिंबति करता है ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 2
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

??????

प्रश्न. भारत में बोद्ध धरुम के इतिहास में पाल काल अतिभिहत्त्वपूर्ण चरण है । वशि्लेषण कीजयि । (2020)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/asian-buddhist-conference-for-peace>

